परिवर्तन

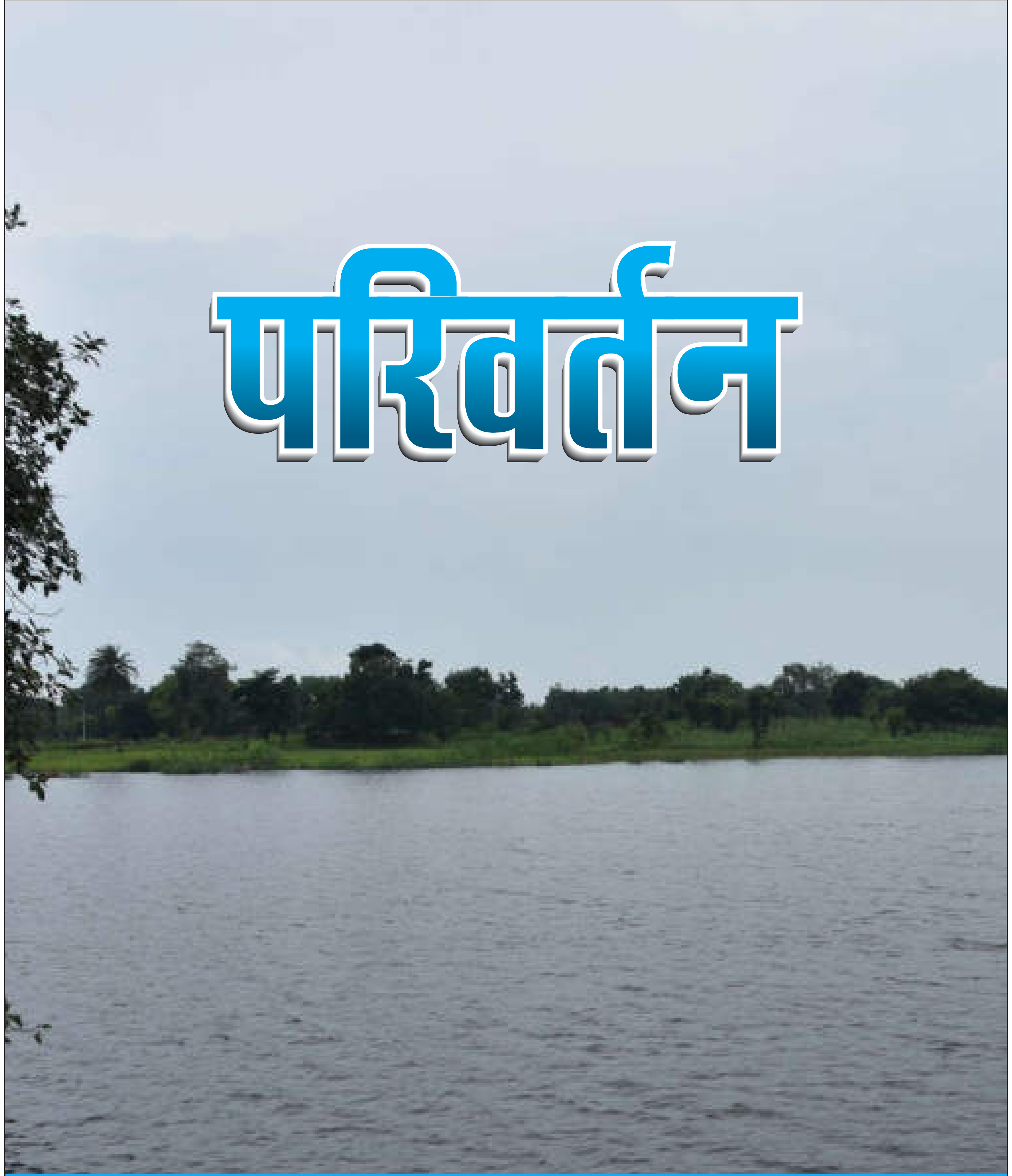

PARMARTH SAMAJ SEVI SANSTHAN

परमार्थ संस्थान के द्वारा बुन्देलखण्ड में जल संरक्षण के लिए पिछले 25 वर्षो से लगातार प्रयास किया जा रहा है। संस्थान का इस क्षेत्र में सामुदायिक सहभागिता से जल संकट को दूर करने का संकल्प है। इसी संकल्प को आगे बढाते हुए संस्थान के द्वारा पिछले 1 साल में झांसी, ललितपुर, टीकमगढ, छतरपुर, हमीरपुर, महोबा में 65 से अधिक जल संरचनाओं के निर्माण एवं मरम्मत का कार्य किया गया है, साथ ही 50 से अधिक संरचनाओं की सिल्ट सफाई के कार्य को भी सामुदायिक सहभागिता से पूर्ण किया गया है। इन कार्यो से पूरे क्षेत्र में 12 लाख क्यूबिक मीटर से अधिक जल का संरक्षण किया जा रहा है। यह कार्य उन सभी पानी पंचायत सदस्यों एवं जल सहेलियों की मेहनत का नतीजा है, जो हर दिन अपने गांव में जल संरक्षण, सम्बर्द्धन के लिए लगे रहते हैं।

इस पुस्तिका में संस्थान के द्वारा जल संरक्षण के लिए किये गये कार्य सफल प्रयासों को लिखने का प्रयास किया गया है। आशा है आप सभी के लिए यह पुस्तिका ज्ञानवर्द्धक होगी।

चंदेलकालीन तालाब के महत्व को बताता बनगायं का तालाब

हजारों साल पहले बनाये गये चंदेलकालीन तालाबों की उपयोगिता क्या थी वह टीकमगढ जिले के बनगायं में स्थित चंदेलकालीन तालाब से पता चलती है, अगर इस तालाब में पानी रहता है तो गांव के लोग गांव में रहते है और अगर पानी नहीं रहता तो गांव के 75 प्रतिशत लोग पलायन कर जाते है। गांव की लगभग 60 प्रतिशत खेती इस तालाब के पानी पर निर्भर है। वैसे तो गांव में पेयजल की आपूर्ति के लिए 10 से 12 हैण्डपम्प शासन के द्वारा लगवाये गये है लेकिन तालाब में पानी खत्म होते ही केवल 2 हैण्डपम्प है जो थोडा बहुत पानी देते थे, बाकि की जरूरत का पानी टैंकर के भरोसे रहती है, अगर टैंकर आ गया तो पानी मिल गया नही आया तो जितना मिला उतने से ही काम चलाना होता था।

गांव में 600 एकड से अधिक कृषि भूमि है, जिसका मुख्य सिंचाई को स्त्रोत यह तालाब है, गांव के 60 प्रतिशत से अधिक किसान या तो इस तालाब से पम्पों के द्वारा सीधा पानी लेते है या उनके कुएं तालाब के स्त्रोत पर पूरी तरह आश्रित है यही वजह है कि रबी की फसल तक इस तालाब में पानी नाम मात्र के लिए रह जाता था। वही दूसरी समस्या इसके बण्ड के स्लूस में हुआ सीपेज था, जिससे तालाब का ज्यादातर पानी बरसात के बाद ही सीपेज हो जाता था। सीपेज से पानी निकलने का सीधा असर इस जल स्त्रोंत पर आश्रित किसानों को पड़ा, वही गांव वालों को पेयजल की आपूर्ति के लिए भी केवल टैंकर का सहारा रहता था। गांव में रहने वाला मछुआ

समुदाय जिसकी मुख्य आजीविका इस तालाब में मछलीपालन सी चलती थी, उनके पास वह भी नहीं रही थी। गांव के ज्यादातर लोग इन समस्याओं के कारण अपनी आजीविका के लिए शहरों की ओर जा रहे थे।

गांव में पानी की समस्या के बारे में बताते हुए पानी पंचायत अध्यक्ष धनीराम कहते है कि मेरे द्वारा अपनी खेती में सिंचाई के लिए अभी तक 2 कुए खोदे और 2 बोरवेल करवाये, लेकिन इसका कोई फायदा नहीं निकला, जब तक तालाब में पानी रहता है तब तक कुओं और बोरवेल में पानी रहता है।

पानी पंचायत के सहयोग से संस्थान के द्वारा तालाब के स्लूस के सीपेज की मरम्मत का कार्य कराया गया जिससे तालाब का जो आधा पानी सीपेज होकर निकल जाता था वह रूका। सिंचाई हेतु पानी के समान बटवारे मे लिए गांव में उपयोगकर्ताओं का जल उपभोक्ता समूह का गठन किया गया। जिसमें सभी सदस्यों की सहमति पर निर्णय लिया गया कि तालाब के 50 प्रतिशत पानी से सिंचाई के कार्य किये जायेगे, आधा पानी सहेजकर रखा जायेगा जिससे पेयजल स्त्रोत एवं कुओं में पर्याप्त मात्रा में पानी की उपलब्धता हो। सीपेज मरम्मत से पहले जहां इस संरचना में 26 करोड लीटर पानी रूकता था वही अब तालाब में 40 करोड लीटर से अधिक पानी का ठहराव होता है, जो गांव के विकास में अपनी अहम भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

कभी निर्मल नदी थी, फिर नाला बनी, अब फिर बरुआ नदी बन बह रही

जल संकट का सामना कर रहे बुंदेलखंड के ललितपुर जनपद के बरुआ नदी के पुनर्जीवित होने की कहानी बेहद रोमांचक और प्रेरणा देने वाली है। सामाजिक संगठनों, स्थानीय लोगों, जन प्रतिनिधियों और प्रशासन ने जब मिलकर कदम बढ़ाया तो नाले के स्वरूप में विलुप्त होने की कगार पर पहुंच चुकी यह नदी पुनर्जीवित हो गई। लगभग सोलह किलोमीटर लंबी यह नदी उद्भव के बाद छह ग्राम पंचायतों के चौदह गांव से होते हुए जामनी नदी में मिल जाती है। इस नदी के संरक्षण के लिए झांसी मंडल के कमिश्नर ने सभी संबंधित ग्राम पंचायतों को नदी संरक्षण समिति बनाकर इसकी निगरानी का निर्देश भी दिया है।

बरुआ नदी का उद्भव करेंगा गांव से होता है और यह एवनी गांव के पास जामनी नदी में मिल जाती है। इस नदी से बालू निकालने के लिए खनन माफियाओं ने बेतरतीब खुदाई की और इस पर बने चेकडैम तोड़ दिए। इससे नदी में पानी का प्रवाह खत्म होने लगा। लगभग चार वर्ष पहले परमार्थ संस्था ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर नदी के पुनर्जीवन के लिए इस पर श्रमदान की योजना बनाई और स्थानीय जनप्रतिनिधियों व प्रशासन का ध्यान इस ओर खींचा। नदी के दोनों ओर मनरेगा से पौधारोपण किया गया और कई स्थानों पर चेकडैम का निर्माण

कराया गया। प्रशासनिक अफसरों की सख्ती के बाद यहां बालू खनन पर रोक लगाई गई। लगभग चार साल की मेहनत के बाद इस नदी में कलकल करती पानी की धारा दिखाई देती है, जिसकी लोगों ने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

नदी के पुनर्जीवन के बाद अब इसके संरक्षण और निगरानी के लिए बरुआ चौकीदार नियुक्त करने की तैयारी है। झांसी मंडल के कमिश्नर डॉ अजय शंकर पांडेय ने निर्देश दिए हैं कि जिन ग्राम पंचायतों से होकर यह नदी गुजरती है, उन सभी में नदी जल संरक्षण समिति का गठन किया जाए। जिस ग्राम पंचायत में नदी की धारा बाधित होगी, उसे दंडित किया जाएगा। इसके साथ ही तालबेहट और पूराकला थानों की पुलिस को निर्देश दिए गए हैं कि नदी से बालू खनन करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

एवनी गांव के रूपदास बताते है कि इस नदी के पुनर्जीवन से क्षेत्र में हरियाली बढी है, जहां पहले नदी में 8 महिने ही धारा चलती थी आज बारह माह धारा चल रही है, इससे आस-पास के जल स्त्रोतों को भी काफी लाभ हुआ है, गर्मियों भी अब जल स्त्रोत नहीं सूख रहे है।

जल जन जोड़ो अभियान के राष्ट्रीय संयोजक डॉ संजय सिंह बताते हैं कि जामनी की यह सहायक नदी छह ग्राम पंचायतों के 14 गांव की लाइफलाइन है। सबके प्रयास के बाद अब इस गर्मी के मौसम में भी यह नदी पर्याप्त प्रवाह के साथ बह रही है। अब तक नदियां नाले में बदलती रही हैं लेकिन यहां नाले को नदी में बदला गया है। यह बड़ी उपलब्धि है। यह पूरे देश के लिए मॉडल है। बरुआ नदी के पुनर्जीवन की कहानी से सबको सीखने की जरूरत है।

किसानों के लिए वरदान से कम नहीं कुंतेवाला चैकडेम, 250 एकड से अधिक क्षेत्र में हो रही सिंचाई

झांसी जिला का बमेर गांव झांसी शहर से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, गांव के लोगों की मुख्य आजीविका का स्त्रोत कृषि है। जो पूरी तरफ वर्षा पर आधारित है, गांव में भू-जल स्तर को बनाये रखने के लिए कोई जल संरचना नहीं है, केवल गांव के किनारे से एक नाला निकला है जिसपर ग्राम पंचायत एवं अन्य विभागों के द्वारा 5 चैकडेम का निर्माण किया गया है। जिससे गांव के भू-जल स्तर को बनाये रखने में मदद करता है। ज्यादातर किसानों की कृषि भी इन्हीं चैकडेमों पर निर्भर करती है अगर इन चैकडेमों में पानी होता है तभी रबी की फसल की जा सकती है, वरना पूरी फसल के लिए पानी की उपलब्धता नही होती है।

आज 15 वर्ष पहले कुंते चैकडेम का निर्माण नाबार्ड के सहयोग से कराया गया था, इस चैकडेम के निर्माण से गांव के 60 किसानों को सीधा लाभ प्राप्त होता था, इन किसानों की लगभग 250 एकड़ की जमीन में आसानी से खेती होती थी, इसमें से कई किसान तो जायद की फसल भी लगाते थे, लेकिन वर्ष 2016 में यकायक अतिवृष्टि होने के कारण चैकडेम क्षतिग्रस्त हो गया। चैकडैम के क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण किसान खरीफ की फसल तो अच्छी तरह कर

लेते लेकिन रबी की फसल के आखिरी में पानी ना होने के कारण फसल में पानी नहीं दे पाते जिससे किसानों की पैदावार कम होने लगी। एक-दो साल में भू-जल 3 से 4 मीटर नीचे तक चला गया, 40 से 45 फुट गहरे कुऐं सूख गये। जिन किसानों के पास पैसा था उनके द्वारा तो बोर कर अपने खेतों के लिए पानी निकाल लिया लेकिन कई किसान तो ऐसे रहे जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी उन्होंने अपने आधी जमीन में ही केवल खेती करना शुरू कर दी। इन किसानों के द्वारा चैकडेम मरम्मत हेतु पानी पंचायत समिति में प्रस्ताव दिया, इस प्रस्ताव के माध्यम से संस्थान के द्वारा 20 मीटर लम्बे चैकडेम की मरम्मत का कार्य किया गया।

गांव के किसान रवेन्द्र सेन बताते है कि सबसे ज्यादा मुसीबत का सामना उनको वर्ष 2017 में करना पडा जिस वर्ष वर्षा भी कम हुयी, इस क्षेत्र के आधे से ज्यादा किसानों को जल संकट के कारण पलायन के लिए मजबूर होना पड़ा। अब दौबारा इस चैकडैम में पानी आने से क्षेत्र के भू-जल स्तर में सुधार होगा, खेती भी सही से कर पायेगे।

मरम्मत कार्य के कारण यह संरचना आज अपने पूर्ण क्षमता के साथ भरी हुयी है। इसमें 80 लाख लीटर से अधिक पानी का भराव है। किसानों के कुओं में 1 मीटर से अधिक जल स्तर की वृद्धि हुयी है। यह जल संरचना आगे चलकर भू-जल भरण एवं किसानों को पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी।

5 दशक पहले भी चंदेल–बुंदेल तालाबों को देखकर बांधे जाते थे तालाबों के पाड

बुन्देलखण्ड क्षेत्र सदियों से जल संरक्षण के लिए पूरे देश में जाना जाता रहा है, पहले इस क्षेत्र में एक-दो साल पानी ना बरसे तब भी यहां के लोगों को पानी की समस्या नहीं होती थी। भले ही अभी के समय में इस इलाके में इस काम को लेकर लोगों की रूचि कम हुयी है, लेकिन आज से 5 दशक पहले भी लोगों ने चंदेली-बुंदेली मॉडल को देखकर अपने गांव के तालाबों की पाड को बांधने का सिलसिला जारी रखा हुआ था। इसका एक उदाहरण टीकमगढ जिले के मस्तापुर गांव में देखने को मिलता है।

भारत में जब पंचायती राज व्यवस्था आयी तो इस गांव में सबसे पहले संरपच के रूप में सिंगई जी चुने गये। उस समय गांव में केवल एक ही मुददा था वो था पानी। भले ही भू-जल अच्छा होने के कारण उस समय लोगों को 10 महिने कुओं से पानी उपलब्ध हो जाता था लेकिन 2 महिनें के लिए गांव के किसी भी कुऐं में घरेलू जरूरतें पूरी करने के लिए भी पानी नहीं होता था, महिलाऐं गांव के दूसरे छोर लगभग 2 किलोमीटर दूर जहां जामनी और सजनाम नदियां मिलती है, वहां के जल स्त्रोतों से पानी लाने में पूरा दिन निकाल देती थी। इसी समस्या को सिंगई जी ने जाना, और चंदेलो के बनाये गये मॉडल का अध्ययन कर गांव के पास फुटेरा तालाब के निर्माण का काम शुरू किया, जो सहायता सरकार से मिली सो मिली बाकि का काम पूरे गांव के लोगों ने मिलकर श्रमदान के जरिये किया। इस तरह 15 एकड़ से अधिक में फैले फुटेरा तालाब के पाड़ का बांधने का काम पूरा हुआ। तालाब के बंध जाने से गांव में पेयजल की समस्या तो खत्म हुयी ही गांव का जोत क्षेत्र खूब बढा। इसी काम का नतीजा रहा कि सिंगई जी 5 पंचवर्षीय तक इस गांव के संरपच बने रहे।

समय चलता रहा और एक वक्त फिर ऐसा आया जब देखरेख के अभाव में तालाब का आउटलेट जो तालाब में ज्यादातर पानी को सहेजता था वह टूट गया और ज्यादातर पानी बरसात के समय ही तालाब से निकलने लगा।

पानी पंचायत के सदस्य गुलाब जो गांव में पेयजल लाइन के ऑपरेटर भी है वह कहते है कि जब तालाब में कम पानी रहने लगा तो इसका सीधा असर गांव के हैण्डपम्पों पर हुआ फिर से हैण्डपम्प गर्मियों के दिनों में सूख जाते और पूरे गांव को दूर से पानी लाने के लिए मजबूर होना पडता था। आज से 23 साल पहले विधायकी के चुनाव में पूरे गांव ने एक ही प्रत्याशी को पूरे वोट दिये, जब वह प्रत्याशी विधायकी जीत कर आये तो उन्होंने गांव में बोर कराकर पूरे गांव में पाइपलाइन के माध्यम से पेयजल पहुचाने का काम किया जो आज भी चालू है, लेकिन जब भी तालाब में पानी नहीं रहता है तो यह साधन भी किसी काम का नहीं रहता। गांव के पास के 45 किसानों को रबी फसल की खेती के लिए पानी का संकट होने लगा।

वर्ष 2021 में परमार्थ संस्थान के द्वारा इस तालाब को फिर से पुनर्जीवित करने के लिए आउटलेट निर्माण का काम किया, साथ ही समुदाय के द्वारा श्रमदान कर तालाब की सिल्ट सफाई का काम किया गया। इस तालाब में आज 5 करोड लीटर से अधिक पानी का संग्रहण हो रहा है। पिछले वर्ष इस तालाब से गांव में पानी का समस्या में बडा बदलाव आया गांव में जहां गर्मियों के दिनों में हैण्डपम्प सूख जाते थे वही आज तालाब के एक बडे हिस्से में पानी है, 50 से 55 किसानों के द्वारा 60 एकड़ से अधिक क्षेत्र में रबी की फसल के दौरान जल संकट का सामना नहीं करना पड़ा।

नदी में फिर बहेगी धारा, जल सम्पन्न होगे आस-पास के गांव

दुनिया में जब भी नदी को पुर्नजीवित करने की बात होती है तो लंदन की थेम्स नदी को फिर से जीवंत बना देने का उदाहरण दिया जाता है। मगर अब लंदन की ये कहानी बहुत पुरानी हो चुकी। अब बुन्देलखण्ड में नदियों के पुनर्जीवन हेतु नदी घाटी संगठन एवं परमार्थ संस्थान ने ऐसे प्रयास किये है, यहां की 4 नदियों को पुर्नजीवित कर दिया है। इसी में से एक नदी झांसी की कनेरा नदी है।

लोग बताते है कि आज से दो दशक पहले इस नदी में साल भर पानी रहता था, लेकिन बुन्देलखण्ड में पडे सूखे के कारण यहां के जलभृत सूख गये। जिसके इसका बारहमासी प्रवाह रूक गया। इस नदी के किनारे बसे गांवों के लोगों की मदद से वर्श 2018 में परमार्थ संस्थान के द्वारा इस नदी को पुर्नजीवित करने का संकल्प लिया एवं लगातार सामुदायिक सहयोग से नदी को पुर्नजीवित करने का कार्य किया। एक समय ऐसा था जब कनेरा नदी बबीना क्षेत्रमें एक सूखे नाले के रूप में पहचानी जाने लगी थी, आज वही 19 किमी लंबी नदी अविरल, निर्मल बह रही है। इससे पहले जब वारिश होती थी तभी तक नदी में पानी रहता था।

नदी में पानी रोकने के लिए पहले से 7 चैकडेम का निर्माण तो किया गया था लेकिन इनमें सिल्ट सफाई के कारण ज्यादा पानी रूकता नहीं था, इसी का परिणाम था कि नदी से पूरा पानी बरसात के मौसम में निकल जाता था इसके लिए संस्थान के द्वारा नदी की सिल्ट सफाई एवं चैकडेम का निर्माण कराया। इस कार्य से नदी के तीव्र बहाव को कम कर नदी में पानी रोकने का काम किया गया।

नदी के पुनर्जीवन के लिए लगातार जिला स्तर पर संवाद किया झांसी जिले के तत्कालीन जिलाधिकारी व मुख्य विकास अधिकारी के साथ मिलकर कार्ययोजना पर कार्य किया गया जिसका फल यह हुआ कि मनरेगा एवं अन्य विभागों से इस नदी पुर्नजीवन के लिए 97 लाख स्वीकृत कराये गये है। इस कार्य को कराने के लिए लघु सिंचाई विभाग, उद्यान विभाग, वन विभाग तीनों को संयुक्त रूप से जिम्मेदारी दी गई है। स्वीकृत बजट के अनुसार नदी की सिल्ट सफाई, चैकडेम निर्माण, चैकडेम मरम्मत, छायादार फलदार वृक्षो का रोपण का कार्य किया गया।

क्षेत्र के सांसद अनुराग शर्मा जी के द्वारा भी नदी के पुनर्जीवन में महत्वपूर्ण योगदान दिया उनके द्वारा पूरे नदी के दोनों किनारों पर 20 हजार से अधिक वृक्षारोपण का कार्य करवाया तथा नदी पुनर्जीवन के काम प्राथमिकता से पूर्ण कराया।

नदी घाटी संगठन के सहयोग से प्रत्येक ग्राम पंचायत में जल साक्षरता एवं नदी के महत्व को बतलाने का काम किया गया। जिससे आस-पास का समुदाय में नदी के संरक्षण के बारे में जागरूकता आयी। सरवां गांव के सुदामा गुप्ता बताते है कि नदी पुनर्जीवन के काम से इस क्षेत्र में फिर से पानी की कमी दूर होगी। जो कुऐं जल स्त्रोत के अभाव के कारण सूख जाते थे उनमें पानी रहेगा वही भू-जल सम्बर्द्धन में मदद होगी।

गांव के लिए वरदान साबित हो रही कुण्डली तलैया

गांव वालों ने बरसात में मौसम में यकायक आने वाली बाढ से पायी राहत, 4 वर्ष पहले जिन नलों में नही था पानी आज बुझा रहे गांव की प्यास

टीकमगढ जिले में स्थित बरेठी के गांव के लिए ''एक तरफ कुआं तो दूसरी तरफ खाई'' कहावत बिल्कुल सटीक बैठती है। जहां 8 महीने गांव वाले पानी की तलाश में रहते है वही 4 महीने घर में बारिश का पानी ना भर जाये इसको देखना होता है। 4000 की आबादी वाला यह गांव पहाडियों के नीचे बसा हुआ है। गांव के बिल्कुल बीच से कुडकी नाला निकलता है, जिसमें पूरे पहाड़ी इलाके का पानी आता है, अगर इस क्षेत्र में 1 घण्टे भी तेज बारिश हो जाये तो गांव के आधे घरों में इस नाले का पानी भर जाता है वही बारिश के महीनों को छोडकर पूरा गांव जल संकट ग्रसित होता है, गांव के आधे से ज्यादा घरों की बस्तियों के हैण्डपम्पों, कुओं में पानी खत्म हो जाता है, किसान जैसे तैसे खरीफ की फसल तो कर लेते है लेकिन रबी की फसल पानी के अभाव में नही कर पाते थे। गांव में इस जल भराव की स्थिति को खत्म

करने के लिए वर्ष 1995 में ग्राम पंचायत के द्वारा गांव के ऊपरी हिस्से में कुण्डली तलैया का निर्माण करवाया था, इस तलैया के निर्माण से ना केवल गांव में यकायक आने वाली बाढ़ की समस्या कम हुयी थी बल्कि तलैया के नीचे वाले किसान अपनी रबी की फसल भी आराम से कर पा रहे थे।

समय के साथ कुण्डली तलैया के बण्ड और आउटलेट क्षतिग्रस्त हो गये जिससे इस तलैया में पानी का भराव बहुत कम रहा गया, गर्मियों के दिनों में लोगों को फिर से पेयजल संकट का सामना करना पडता है। 4 चार पहले इस पेयजल संकट की कमी को दूर करने के लिए गांव की बस्ती में एक अन्य हैण्डपम्प की स्थापना भी करवायी गयी लेकिन उसमें भी पानी नहीं निकला।

परमार्थ संस्थान के द्वारा जल सहेलियों एवं पानी पंचायत के सहयोग से एक बार फिर से इस संरचना को सही करने का काम किया, पहले ग्राम पंचायत ने मनरेगा के माध्यम से तलैया का गहरीकरण किया फिर जल सहेलियों के समन्वय से कोविड के दौरान गांव के लोगों ने भी बहुत कम मजदूरी में सिल्ट सफाई की। पिछले वर्ष संस्थान के द्वारा संरचना के टूटे पडे आउटलेट के निर्माण का काम किया, जिससे इस तलैया में आज 30 लाख लीटर से अधिक पानी का संग्रहण होता है। जो नल गर्मियों में पानी देना बंद कर देते थे आज वह गर्मियों में भी पानी दे रहे है।

शौभाराम बताते है गांव में नाले के दूसरे तरफ स्कूल स्थित है जिसमें पूरे गांव के बच्चे पढने जाते है, जाने कितने बार ऐसा हुआ कि दिन में बारिश हुयी और बच्चे कई घण्टे गांव के दूसरी तरफ फंसे रहे, अपने घर नहीं पहुंच पाये। इस संरचना में आउटलेट निर्माण होने से यकायक बाढ की समस्या का निदान तो हुआ ही है वही 20 से 25 किसानों को भी इसका लाभ मिल रहा है, वह अब अपने खेतों में रबी की फसल कर पा रहे है।

बुंदेली जल विज्ञान से आज भी लाभान्वित हो रहा है समुदाय

चंदेलकालीन तालाबों का निर्माण 10वी से 13वी सदी के बीच किया गया था, यह तालाब यहां की कुओं और भू-जल भण्डार का बनाये रखने के लिए मुख्य स्त्रोंत थे, इनके लगातार ह्रास होने से इस इलाके को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है।

टीकमगढ जिले से 35 किलोमीटर दूर दरगांय कला ग्राम पंचायत का गांव कौडिया स्थित है, इस गांव के चारों तरफ वन विभाग व पहाड़ी इलाका है। जल संरक्षण एवं प्रबंधन का एक मात्र स्त्रोत चंदेलकालीन तालाब है जिसका विस्तार 22 एकड में है। यह तालाब भी बुंदेली डिजायन एवं इंजीनिरिंग के अनुसार गांव के ऊपरी हिस्से में बनाया गया है, जिससे गांव की नीचे के क्षेत्र में पानी के जल स्त्रोत की उपलब्धता हो। इस चंदेलकालीन तालाब की डिजायन ऐसे की गई थी कि गर्मियों में यह किसानों को सिंचाई के लिए पानी मुहैया कराये इसके लिए इसके बंण्ड से नहर भी निकाली गयी है, साथ ही गांव के हैण्डपम्पों को मुख्य स्त्रोत भी यही तालाब है।

इस चंदेलकालीन तालाब का सही से संरक्षण नहीं होने के कारण तालाब के बांध में सीपेज की समस्या एवं सिल्ट की समस्या आ गयी, बरसात में तालाब में जितना भी पानी इकठठा होता, धीरे-धीरे एक-दो महीनें में निकल जाता था। तालाब से नहर के माध्यम से जो किसान अपनी खेती के लिए पानी लेते थे उनको भी सिंचाई के लिए पानी की उपलब्धता नहीं रही, कई किसानों ने तो अपने कुऐं खोद लिये, जितना पानी उनमें निकला उससे थोड़ी बहुत खेती कर ली लेकिन कई किसान ऐसे भी थे जिनके जमीन में केवल खरीफ की ही फसल होने लगी। पूरा गांव पानी की समस्या के कारण परेशान रहता, जैसे ही सर्दियों के दिन गुजरते लोग पेयजल के लिए एक-दो हैण्डपम्प से अपना गुजारा करते, जिसके लिए कई घण्टों की मशक्कत करनी पडती। गांव में खेती ना होने के कारण कुछ परिवार तो शहरों की तरफ पलायन करने को मजबूर हो गये थे।

संस्थान के द्वारा इस चंदेलकालीन तालाब के पुनरूद्धार के लिए जनपैरवी के माध्यम से तालाब में सिल्ट सफाई का कार्य करवाया तथा सीपेज को रोकने के लिए वेल्टहंगरहिल्फे की सहायता से 65 मीटर लम्बी पक्की दीवाल बनवाई। इस दीवार के बनने से बण्ड से सीपेज होकर निकलने वाला पानी रूका। पिछले साल तालाब में सीपेज ना होने के कारण तालाब में पूरे साल पानी की उपलब्धता रही, किसान जहां पानी की समस्या के कारण खेती नहीं करते थे वही किसानों के द्वारा तालाब से निकली नहर के माध्यम से रबी की खेती की। जिससे उनकी खेती की लागत भी कम आई। जो किसान पानी ना होने के कारण शहर की ओर पलायन कर जाते थे उनके द्वारा इस वर्ष अपने गांव में खेती की। मरम्मत कार्य के हो जाने से इस चंदेलकालीन तालाब में 14 करोड लीटर से अधिक पानी का ठहराव हो रहा है। यह चंदेल कालीन तालाब आज ना पूरे गांव के लिए अपनी महत्वूपर्ण भूमिका सुनिश्चित कर रहा है साथ पूरे क्षेत्र मे तापमान को संतुलित करने का काम कर रहा है, इससे जमीन की नमी एवं भू-जल स्तर को बनाये रखने में मदद मिल रही है।

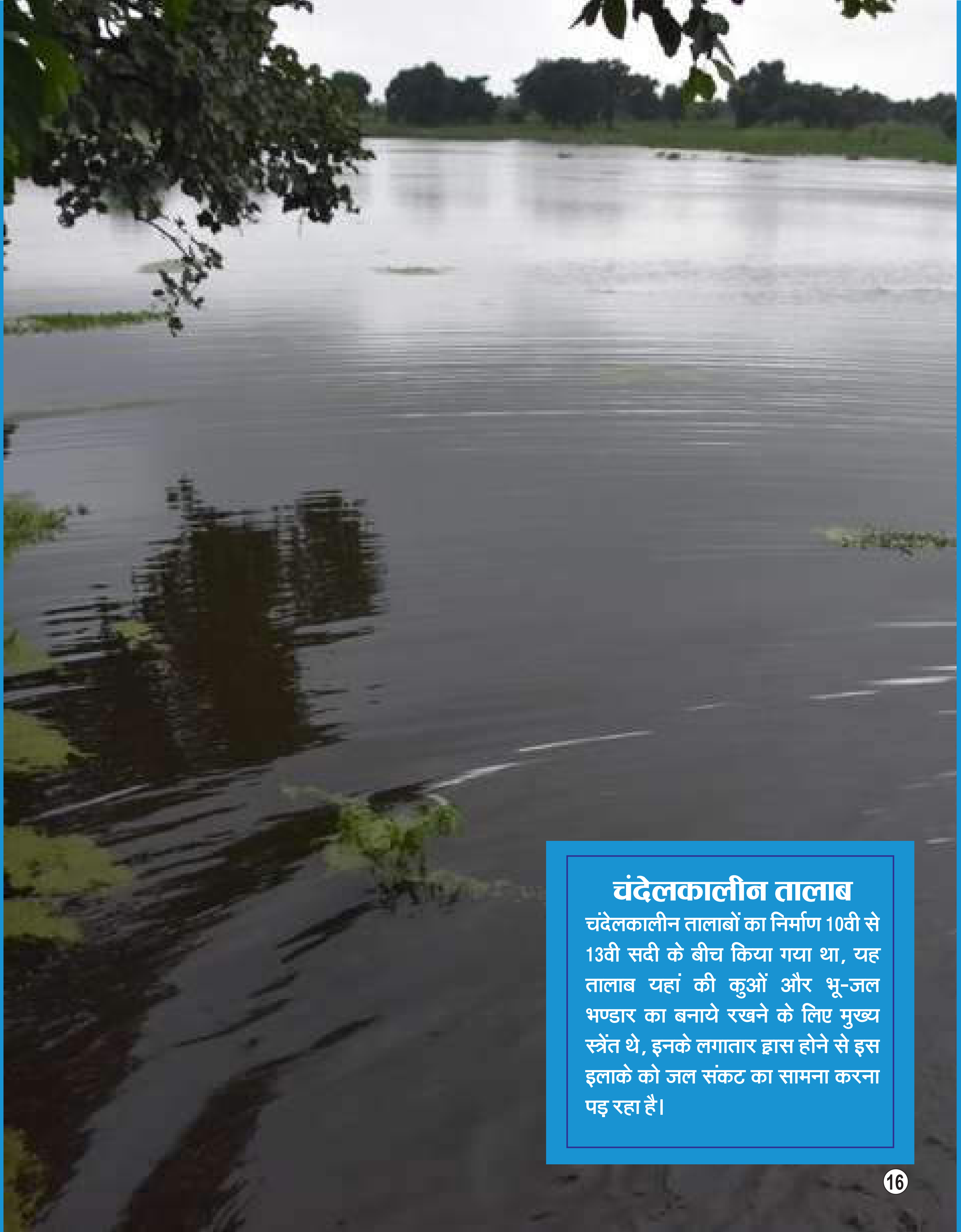

चंदेलकालीन तालाब

चंदेलकालीन तालाबों का निर्माण 10वी से 13वी सदी के बीच किया गया था, यह तालाब यहां की कुओं और भू-जल भण्डार का बनाये रखने के लिए मुख्य स्त्रेंत थे, इनके लगातार ह्रास होने से इस इलाके को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है।

गांव के किसान संजीव शर्मा बताते है कि गांव के करीब 45 किसानों की आजीविका इस तालाब से सीधे तौर से जुडी हुयी है। 80 एकड जमीन जो पूरी तरह से इस संरचना के पानी पर निर्भर थी, अब उसमें केवल खरीफ की फसल ही किसान कर पाते थे। ज्यादातर कुओं का मुख्य जल स्त्रोत यही तालाब था, इसमें पानी ना रहने से कुओं से भी किसानों को सिंचाई हेतु पानी नहीं मिल रहा है।

संस्थान के द्वारा किसानों की मांग पर पानी पंचायत के सहयोग से इस तालाब को फिर से पुनर्जीवित करने का काम किया । तालाब में जो सीपेज था उसके लिए संस्थान के द्वारा बंध मरम्मत का काम किया गया है। इस वर्ष मानसून की पहली बरसात में ही यह संरचना अपने पूर्ण क्षमता के साथ भर गयी। इस संरचना की मरम्मत होने के कारण सबसे ज्यादा लाभ यहां के किसानों को होगा जो सिंचाई के लिए पानी ना होने के कारण अपनी फसल को नहीं कर पाते थे अब वह अपनी बंजर पडी जमीन पर खेती कर पायेगे। 8 एकड में फैले इस तालाब में 1.5 करोड लीटर से अधिक अधिक पानी का ठहराव होगा। मृदा में नमी की वृद्धि होगी और क्षेत्र में हरियाली बढेगी।

नदी घाटी संगठन के सदस्यों की मेहनत रंग लायी, बछेडी नदी में रहेगा 12 मास पानी

माना जाता है कि सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारों पर ही हुआ है। लेकिन हम जिस दौर में जी रहे हैं और विकास की जिस अंधाधुंध दौड़ में शामिल हो गए हैं, उसने सबसे पहला हमला हमारी नदियों पर ही किया है। एक ओर नदियों को प्रदूषित किया जा रहा है तो दूसरी ओर कई नदियां विलुप्ति के कगार पर हैं या विलुप्त हो चुकी हैं। ऐसे में बुन्देलखण्ड में परमार्थ संस्थान एवं नदी घाटी संगठन अपने यहां की नदियों को बचाने का प्रकल्प चलाया है। इसी प्रकल्प में सम्मिलित थी बछेडी नदी, जिसके पुनर्जीवन के लिए नदी घाटी संगठन के द्वारा पिछले 4 वर्षो से निरन्तर प्रयास किया जा रहा था, इस वर्ष सदस्यों को आशा है उनके प्रयास पूर्णलक्षित होगे, नदी में पूरे 12 माह पानी रहेगा।

आपको बता दे कि बछेड़ी नदी छतरपुर जिले के विकास खंड बड़ामलेहरा में पश्चिम से पूर्व की दिशा में बहने वाली 15 किमी. की नदी है, जो 12 गांवों से गुजरती है, यह नदी का उदगम स्थल छिवला है जहां से यह शुरू होती है, रास्तें में तालाबों एवं स्थानीय पहाड़ियों से आने वाली छोटे नाले इसमें मिलते है, आगे जाकर काचरा नाला नाम से एक

और इसमें आकर मिलता है, जो हीरापुर तालाब और सेवार गुलाई तिगड्डा तालाब से शुरू होता है। नदी सिमरिया गांव और अगरौठा बांध से होकर गुजरती है जो मुख्य भूजल पुनर्भरण स्रोत है और नदी को भी रिचार्ज करते है। अंत में यह नदी धसान नदी में मिल जाती है।

परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा आज से 4 वर्ष पहले इस नदी के पुनर्जीवन के लिए नदी घाटी संगठन का निर्माण किया गया था, तब से संगठन के द्वारा स्वयं एवं शासन, प्रशासन से सहायता लेकर इस नदी को जिंदा करने का काम किया जा रहा है। पहले स्वयं जल योद्धाओं एवं जल सहेलियों ने नदी यात्र कर श्रमदान कर सिल्ट सफाई, वृक्षारोपण का काम किया फिर सरकार से सहयोग लेकर पानी का रोकने के लिए संरचनाओं का निर्माण करवाया।

नदी में पहले से कुछ संरचनाऐं थी जो क्षतिग्रस्त हो गयी थी, जिसके लिए नदी घाटी संगठन के सहयोग से परमार्थ संस्थान ने ठीक करने का काम किया। आज बारिश का पानी सभी संरचनाओं में ठहरा हुआ है।

भेल्दा गांव के जगत लोधी बताते है कि इस नदी के माध्यम से 4 से 5 गाँव लाभान्वित होगें, आस पास के गाँवों की लगभग 500 एकड़ जमींन की सिंचाई होगी। भूजल भरण में वृद्धि हुई है। बारिश का पानी नदी में आने के बाद आस-पास के कुओं में 1 मीटर से अधिक पानी का इजाफा हुआ है।

चैकडैम मरम्मत से किसान फिर से कर सकेगे रबी की फसल

बुन्देलखण्ड में जल संरक्षण के लिए कई सदियों से प्रयास तो बहुत किये गये लेकिन इनके संरक्षण को लेकर इस क्षेत्र में कोई विशेष प्रयास नहीं किया गया। यहां चाहे वह चंदेली-बुदेंली तालाब हो या सरकार के द्वारा बनाये गये छोटे-बडे चैकडैम सभी संरचनाऐं देखरेख के अभाव में. क्षतिग्रस्त होकर अपने महत्व को खोती जा रही है। ऐसा ही एक चैकडेम ललितपुर जिले के ग्राम शाहपुरा में था जिसकी मरम्मत का कार्य परमार्थ संस्थान के द्वारा किया गया। यह चैकडैम आज से 12 वर्ष पहले बनाया गया था, चैकडैम बनने से एक तरफ यहां के किसानों को पानी की उपलब्धता हो रही थी वही भू-जल भरण का काम हो पा रहा था लेकिन संरचना की देखरेख ना होने के कारण पहले चैकडैम में सीपेज हुआ फिर एक बारिश में चैकडैम का ज्यादातर भाग क्षतिग्रस्त हो गया। सीपेज के बाद जितना पानी रूकता भी था वह भी इस चैकडैम में रूकना बंद हो गया, जब चैकडैम में पानी नहीं रहा तब यहां के किसानों को इस चैकडैम की महत्व समझ आया, उनकी खरीफ की फसल तो आसानी से हो जाती लेकिन रबी की फसल के लिए पानी के लिए मशक्कत करनी पडती। कई किसानों ने तो अपने कुओं को और गहरा करवाया लेकिन तब भी जितना पानी चाहिए था उतना पानी उपलब्ध नहीं हो सका। इस वर्ष जब किसानों ने परमार्थ संस्थान के द्वारा जल संरक्षण के कार्यो के बारे में जाना तो उन्होंने भी अपने इस चैकडैम की मरम्मत का प्रस्ताव रखा। आज इस चैकडैम के मरम्मत होने के कारण यहां के किसान खुश है। इस संरचना में 80 लाख लीटर से अधिक पानी जमा हो रहा है। जो इस क्षेत्र में नमी बनाये रखने का काम करेगा। मरम्मत कार्य के बारे में बताते हुए हरदेव यादव कहते है कि जब तक यह संरचना थी तब हमें इसके महत्व के बारे में इतना ध्यान नहीं दिया करते थे लेकिन जब इसमें पानी रहना बंद हो गया तब हमारे कुओं में भी पानी नहीं रहा। अब चैकडैम मरम्मत से दोबारा कुओं में पानी होगा, हम लोग जहां रबी की फसल में आधे कृषि क्षेत्र में करते थे वही पानी की उपलब्धता से दोबारा पूरे कृषि क्षेत्र में खेती कर सकेगे।

टूटे पडे चैकडेम की मरम्मत होने से फिर से सहेजा जा रहा लाखों लीटर पानी

जिला ललितपुर के ग्राम सरखड़ी में सिंचाई विभाग के द्वारा आज से 8 वर्ष पूर्व किसानों को सिंचाई व्यवस्था हेतु चैकडैम का निर्माण कराया गया था, लेकिन इस चैकडैम का सही से निर्माण ना होने के कारण यह चैकडैम 2 साल में ही टूट गया। जिस उद्देश्य को देखते हुए सरकार के द्वारा इस चैकडैम का निर्माण कराया था वह नहीं हो पा रहा था। संस्थान के द्वारा बुन्देलखण्ड में ऐसी ही संरचनाओं के ठीक करने का कार्य इस वर्ष किया जा रहा है जिससे कम लागत में अधिक से अधिक वर्षा जल का संरक्षण, सम्बर्द्धन किया जा सके। इसी कार्य के अन्तर्गत पानी पंचायत एवं जल सहेलियों के सहयोग से सरखड़ी में स्थित इस चैकडैम के मरम्मत का कार्य पूर्ण किया गया। जहां यह चैकडैम स्थित है, वहां किसानों का पानी का मुख्य स्त्रोत यही चैकडैम है, इसी चैकडैम से यहां के कुओं में पानी भी रहता है। यहां के किसान बताते है कि जब यह चैकडैम सिंचाई विभाग के द्वारा बनाया गया था तो इस क्षेत्र में भू-जल स्तर 2 फुट तक बढ गया था, लेकिन इसके क्षतिग्रस्त होने पर फिर से भू-जल स्तर में गिरावट हो गयी।

इस संरचना में पुनः पानी रूकने के कारण यहां पर कृषि कार्य करने वाले 30 किसान अपनी खेती फिर से कर सकेगे और क्षेत्र में पुनः भू-जल सम्बर्द्धित हो सकेगा। आज यह संरचना 70 लाख लीटर से अधिक पानी को सहेज रहा है।

चैकडेम का लाभ उठा रहे जयहिंद बताते है कि चैकडैम के मरम्मत कार्य से उनकी आजीविका में वृद्धि होगी। यह संरचना सिंचाई के साथ-साथ इस क्षेत्र के पशुओं के लिए पानी की भी व्यवस्था करता है।

पानी पंचायत के द्वारा इस संरचना की देख-रेख के लिए जल उपभोक्ता समूह का गठन किया है जिसमें उन किसानों का रखा गया है जिन किसानों को इस संरचना से लाभ हो रहा है।

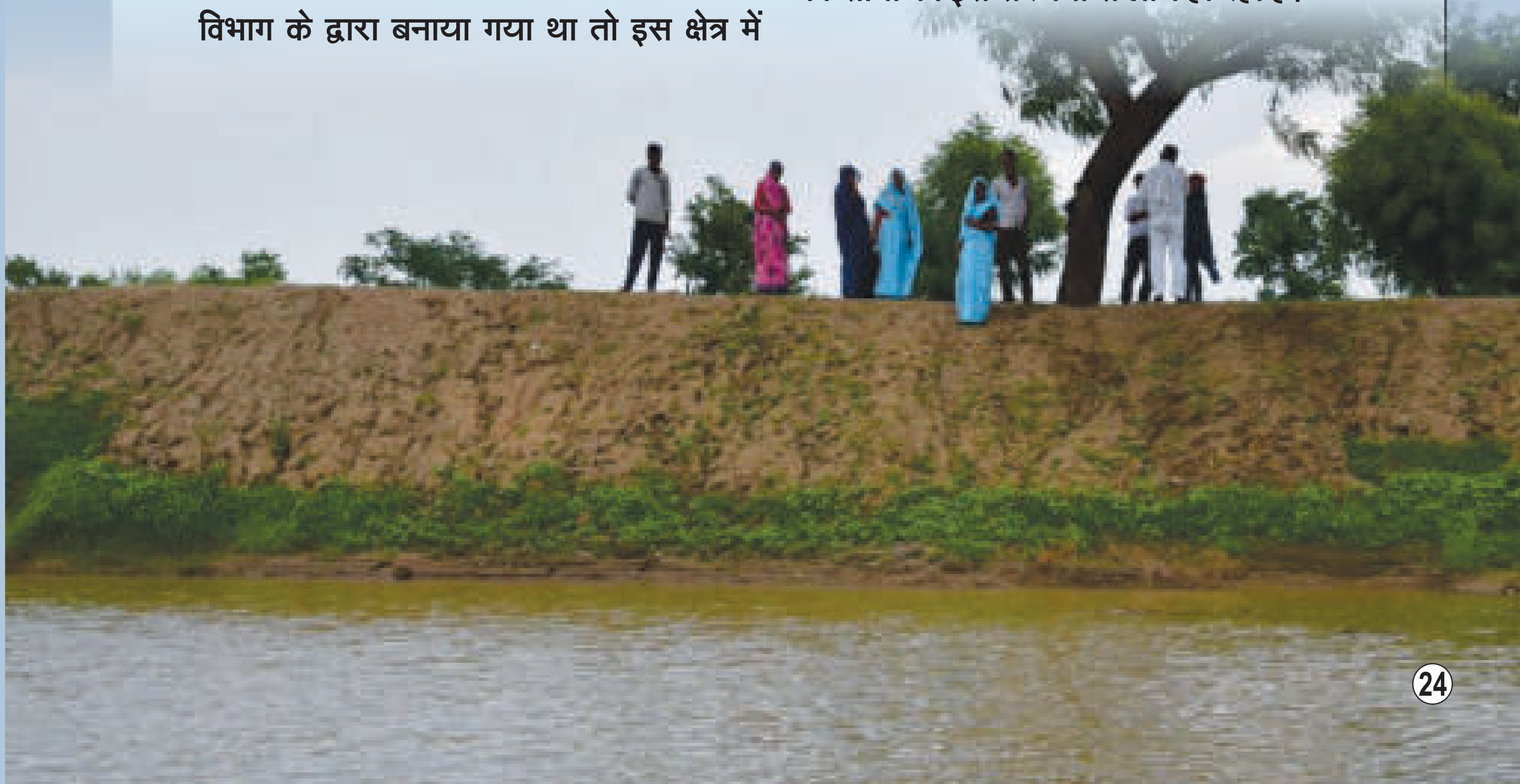

अर्दन बण्ड के निर्माण से गांव वालों को उपलब्ध हो रहा पेयजल

बुन्देलखण्ड एक पथरीले इलाके में रूप में पहचाना जाता है, जहां वर्षा का ज्यादातर पानी नदियों के रास्ते निकल जाता है। पानी का ठहराव ना होने के कारण ऐसे कई क्षेत्र है जिनमें 8-10 महीने तो पानी की उपलब्धता बनी रहती है लेकिन 2-4 महिने लोगों को पेयजल के लिए भी पानी नहीं मिलता है। ऐसा ही जिला ललितपुर है जिसमें ऐसे कई गांव है जो पठारी इलाके में बसे हुए है इन गांवों मे सरकार के द्वारा भी पेयजल की समस्या के लिए तमाम प्रयास करने के बाबजूद पेयजल संकट खत्म नहीं हुआ है। जिले की तालबेहट ब्लॉक में बसे राजपुर गांव की तस्वीर भी कुछ ऐसी ही है, गांव में सरकार के द्वारा नल जल योजना के अन्तर्गत पाइप लाइन तो डाली गयी है, लेकिन पाइपलाइन से आधे गांव को पानी ही नहीं मिल पाता है, मुहल्ले के आस-पास लगे हैण्डपम्प केवल 6 महिने तक पानी देते है इसके बाद एक कुआ है जो दो-चार माह पेयजल की आपूर्ति करता है, बाद में आदिवासी समुदाय के 80 परिवार या तो टैंकर के भरोसे होते है या फिर एक-डेढ किलोमीटर दूर से स्वयं पानी

लेने जाना होता है। इस गांव में पेयजल की समस्या के निदान करने हेतु परमार्थ संस्थान के द्वारा गांव के पास दो अर्दन डैम का निर्माण कराया गया है, इन अर्दन डैम के निर्माण से इस क्षेत्र का ज्यादातर पानी रूकेगा जो बाद में यहां के जल स्त्रोतों को रिचार्ज करने में मदद करेगा। इस काम में संस्थान के द्वारा पहले आदिवासी समुदाय को संवेदित किया और पानी पंचायत समिति का गठन किया। समिति के द्वारा गांव में पेयजल संकट के समाधान के लिए इन जल संरचनाओं के निर्माण के लिए जगह को चिहिंत किया। कोरोना काल में समुदाय के द्वारा श्रमदान के माध्मय से बण्ड का निर्माण करने का काम किया गया। इस वर्ष संस्थान के द्वारा इन अर्दन वण्ड में आउटलेट एवं पिचिंग का कार्य किया गया, जिससे यह संरचनाऐं क्षतिग्रस्त ना हो। राजपुर गांव के बृजेन्द्र कहते है कि इन अर्दन डैम में पानी रूकने से काफी हद तक पेयजल स्त्रोतो में पानी रहेगा, जिससे गांव के 80 परिवारों को पेयजल की समस्या का निदान होगा।

4 RIVER REJUVENATION

Facilitate Empowering Process

PARMARTH

परमार्थ समाज सेवी संस्थान

प्रधान कार्यालय- आयकर विभाग के सामने में, चुर्खी रोड, उरई, जालौन- 285001

नेटवर्किंग कार्यालय- नजा हॉस्पिटल की दूसरी वाली गली, शिवाजी नगर, झांसी- 284001

Email- parmarthjhansi@gmail.com

Website- www.parmarthindia.com

Phone- 0510-2321051, 05162254910